MASA–05

June – Examination 2024

M.A. (Final) Examination

SANSKRIT

(गद्य तथा काव्य)

Paper : MASA-05

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **80***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **8×2=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. (i) महाकवि बाणभट्ट विरचित कथा का नाम बताइए।

(ii) बाणभट्ट द्वारा रचित किस ग्रन्थ में पुनर्जन्म के सिद्धान्त का प्रतिष्ठापन किया गया है ?

(iii) महाकवि माघ विरचित महाकाव्य का नाम लिखिए।

(iv) "माघे सन्ति.....गुणाः" माघ के काव्य में कितने गुण विद्यमान हैं ?

(v) महाकवि बिल्हण रचित 'विक्रमाङ्कदेवचरित' महाकाव्य किस प्रकार का महाकाव्य है ?

(vi) शिवमहिम्नः स्तोत्र में किस देव की स्तुति की गई है ?

(vii) 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य में 'कुमार' कौन हैं ?

(viii) 'कुमारसम्भवम्' महाकाव्य में कितने सर्ग हैं ?

खण्ड—ब **4×8=32**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 8 अंक का है।

2. निम्नलिखित गद्यांश का सप्रसंग अनुवाद कीजिए :

यस्मिंश्च राजनि जितजगति परिपालयति महीं चित्रकर्मसु वर्णसङ्करा:, रतेषु केशग्रहा:, काव्येषु दृढबन्धा:, शास्त्रेषु चिन्ता:, स्वप्नेषु विप्रलम्भा:, छत्रेषु कनकदण्डा:, ध्वजेषु प्रकम्पा: गीतेषु रागविलासितानि, करिषु मदविकारा:, चापेषु गुणच्छेदा:, गवाक्षेषु जालमार्गा:, राशिकृपाणकवचेषु कलङ्का:, रतिकलहेषु दूत-सम्प्रेषणानि सार्य्यक्षेषु शून्यगृहा: न प्रजानामासन्।

अथवा

तत्र च शाखाग्रेषु कीटरोदरेषु पल्लवान्तरेषु स्कन्धसन्धिषु जीर्णवल्कलविवरेषु च महावकाशतया विश्रब्ध-विरचित-कुलायसहस्राणि दुरारोहतया विगतभयानि नाना देश समागतानि शुक-शकुनिकुलानि प्रतिवसन्ति स्म।

3. अधोलिखित श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए :

रत्नस्तम्भेषु संक्रान्तप्रतिमास्ते चकाशिरे।

एकाकिनोऽपि परित: पौरुषेयवृत्ता इव॥

अथवा

तेजस्विमध्ये तेजस्वी दवीयानपि गण्यते।

पञ्चम: पञ्चतपसस्तपनो जातवेदसाम्॥

4. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

कथासु ये लब्धरसा: कवीनां,

ते नानुरज्यन्ति कथान्तरेषु।

न ग्रन्थि पर्णप्रणयाश्चरन्ति

कस्तूरिकागन्धमृगास्तृणेषु॥

अथवा

सुधाकरं वार्धकत: क्षपाया:

संक्षेप्य मूर्द्धानमिवान्मन्तम्।

तद्विप्लवायेव सरोजिनीनां

स्मितोन्मुखं पङ्कजवक्त्रमासीत्॥

5. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए :

त्रयी साख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति,

प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।

रुचिनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां,

नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

अथवा

प्रजानाथं नाथ प्रसभमधिकं स्वां दुहितरं

गतं रोहिदभूतां रिरमयिषुमृस्यस्य वपुषा।

धनुःष्पाणेः यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं

त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः।

6. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए :

अथानुरूपाभिनिवेशं-तोषिणा

कृताभ्यनुज्ञा गुरुणा गरीयसा।

प्रजासु पश्चात् प्रथितं तदाज्ञया,

जगाम गौर शिखरं शिखण्डिमत्॥

अथवा

द्वयं गतं सम्प्रति शोचनीयतां

समागम-प्रार्थनया कपालिनः।

कला च सा कान्तिमती कलावत-

स्त्वमस्य लोकस्य च नेत्र कौमुदी॥

7. महाकवि बाणभट्ट रचित कादम्बरी की गद्य शैली की विवेचना कीजिए।

8. विक्रमाङ्क देवचरितं में वर्णित प्रभात-वर्णन का चित्रण कीजिए।

9. आचार्य पुष्पदन्त विरचित शिवमहिम्नः स्तोत्र के अनुसार भगवान शिव की विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।

खण्ड—स **2×16=32**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का है।

10. 'कादम्बरी रसज्ञानामहारोऽपि न रोचते' उक्ति की समीक्षा अपने पाठ्यांश के आधार पर कीजिए।

11. 'शिशुपालवधम्' के द्वितीय सर्ग के अनुसार श्रीकृष्ण द्वारा दिये गए तर्कों का विवेचन अपने शब्दों में लिखिए।

12. 'कुमारसम्भवम्' के पञ्चम सर्ग के आधार पर पार्वती एवं ब्रह्मचारी के संवाद का विवेचन अपने शब्दों में कीजिए।

13. कादम्बरी में वर्णित शबर सैन्य द्वारा विन्ध्याटवी के विध्वंस की विवेचना कीजिए।